मौलाना बरकतुल्लाह भोपाली

आधुनिक भारतीय इतिहास (मुख्य परीक्षा: सामान्य अध्ययन-I) | समाचार संदर्भ: जून 2026 में विश्वविद्यालय का नाम बदलने का विवाद; बाद की स्थिति अलग से स्पष्ट। | प्रकाशित: 24 अक्टूबर 2026

खबरों में क्यों

जून 2026 में भोपाल के बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद ने संस्थान का नाम बदलने का प्रस्ताव पारित किया। इससे उस स्वतंत्रता सेनानी के योगदान पर चर्चा हुई, जिनके सम्मान में विश्वविद्यालय को 1988 में यह नाम दिया गया था। मौलाना बरकतुल्लाह भोपाली ने भारत के बाहर रहकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लेखन, संगठन और अंतरराष्ट्रीय संपर्कों के जरिए काम किया था।

प्रस्ताव को अंतिम निर्णय न समझें: 26 जून की बाद की रिपोर्ट में नाम बदलने की पहल आगे न बढ़ाने की बात सामने आई। 20 जुलाई की रिपोर्ट के अनुसार राज्य सरकार ने विधानसभा को बताया कि नाम बदलने का कोई निर्णय नहीं लिया गया था। इसलिए जून के प्रस्ताव को लागू नाम-परिवर्तन बताना गलत होगा। ये उस समय की रिपोर्टें हैं, अक्टूबर में कोई नया फैसला होने का दावा नहीं।

कौन थे बरकतुल्लाह?

बरकतुल्लाह का जन्म 7 जुलाई 1854 को भोपाल में हुआ था। वह विद्वान, शिक्षक, पत्रकार और क्रांतिकारी थे। उनका कार्यक्षेत्र किसी एक देश तक सीमित नहीं रहा। ब्रिटेन, जापान, अमेरिका, जर्मनी और अफगानिस्तान जैसे देशों में उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में संपर्क बनाए।

उनकी कहानी स्वतंत्रता आंदोलन के उस पक्ष को सामने लाती है जो भारत की सीमाओं के बाहर सक्रिय था। प्रवासी भारतीयों के संगठन, विदेशों में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ और दूसरे देशों से समर्थन पाने के प्रयास भी ब्रिटिश शासन को चुनौती देने की रणनीति का हिस्सा थे।

गदर आंदोलन से संबंध:

बरकतुल्लाह गदर आंदोलन से जुड़े प्रमुख क्रांतिकारियों में थे। प्रवासी भारतीयों के इस आंदोलन का लक्ष्य ब्रिटिश शासन से भारत को स्वतंत्र कराना था। उसने लेखन और संगठन के साथ सशस्त्र प्रतिरोध का मार्ग अपनाया।

विदेश में रह रहे भारतीयों को जोड़ना महत्वपूर्ण था, क्योंकि उनके पास यात्रा, धन-संग्रह और अलग-अलग देशों तक संदेश पहुँचाने के अवसर थे। साथ ही दूरी, निगरानी और अलग देशों के राजनीतिक हित उनकी गतिविधियों की सीमाएँ भी थे। विदेश में समर्थन मिलना अपने आप भारत में सत्ता बदलने की क्षमता नहीं देता था।

काबुल की अस्थायी सरकार:

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान 1915 में काबुल में भारत की एक अस्थायी निर्वासित सरकार बनाई गई। राजा महेंद्र प्रताप उसके राष्ट्रपति और बरकतुल्लाह प्रधानमंत्री थे। उबैदुल्लाह सिंधी भी इस पहल से जुड़े थे।

निर्वासित सरकार क्या होती है? यह ऐसा राजनीतिक संगठन होता है जो अपने देश के बाहर रहकर उसका प्रतिनिधित्व करने का दावा करता है। वह हमेशा अपने देश की जमीन या प्रशासन पर वास्तविक नियंत्रण नहीं रखता। काबुल की पहल ब्रिटिश शासन से

बाहर भारतीय स्वतंत्रता की राजनीतिक अभिव्यक्ति और विदेशी समर्थन जुटाने का प्रयास थी।

इस पद को आजाद भारत के संवैधानिक प्रधानमंत्री पद से नहीं मिलाना चाहिए। बरकतुल्लाह को संदर्भ के बिना 'स्वतंत्र भारत का पहला प्रधानमंत्री' कहना भ्रम पैदा करता है। सही संदर्भ 1915 की काबुल स्थित अस्थायी निर्वासित सरकार है, न कि 1947 के बाद बनी भारतीय शासन-व्यवस्था।

विश्वयुद्ध ने क्या अवसर दिया?

ब्रिटेन उस समय विश्वयुद्ध में व्यस्त था। भारतीय क्रांतिकारियों ने ब्रिटेन के विरोधी देशों और अन्य राजनीतिक शक्तियों से सहायता पाने की कोशिश की। बरकतुल्लाह ने अंतरराष्ट्रीय संपर्कों के इसी क्षेत्र में काम किया और 1919 में लेनिन से भी मिले।

लेकिन क्रांतिकारियों और विदेशी सरकारों के लक्ष्य समान होना जरूरी नहीं था। भारतीयों के लिए स्वतंत्रता मुख्य लक्ष्य था; विदेशी शक्तियाँ अपने युद्ध और कूटनीतिक हित देखती थीं। यही कारण है कि विदेशी सहायता की संभावना और किसी विदेशी सरकार पर निर्भरता के जोखिम को अलग-अलग समझना चाहिए।

साझा राष्ट्रवाद का विचार:

बरकतुल्लाह हिंदू-मुस्लिम एकता को स्वतंत्रता संघर्ष की महत्वपूर्ण शर्त मानते थे। उनके पत्रों और राजनीतिक सहयोग में यह विचार दिखाई देता है। राजा महेंद्र प्रताप और दूसरे साथियों के साथ काम करना इस साझा प्रयास का उदाहरण था।

उनके राष्ट्रवाद को केवल उनकी धार्मिक पहचान तक सीमित करना उनके व्यापक राजनीतिक काम को छोटा कर देता है। उनके लिए औपनिवेशिक शासन का विरोध अलग-अलग समुदायों को एक साझा लक्ष्य के लिए जोड़ने का प्रश्न भी था।

पत्रकारिता और प्रवासी नेटवर्क:

बरकतुल्लाह ने भाषण, लेख और पत्र-पत्रिकाओं को राजनीतिक जागरूकता के साधन के रूप में इस्तेमाल किया। विदेश में प्रकाशित सामग्री भारत और प्रवासी समुदायों तक विचार पहुँचाती थी। ब्रिटिश शासन ऐसी गतिविधियों पर निगरानी और प्रतिबंध लगाता था।

इससे स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल भारत में हुए जन-प्रदर्शनों का इतिहास नहीं है। वह विचारों, यात्राओं, पत्राचार और संगठनों का भी इतिहास है। अलग-अलग रणनीतियाँ अपनाने वाले लोगों के योगदान को उनके समय और परिस्थितियों में समझना चाहिए।

विरासत और सार्वजनिक स्मृति:

बरकतुल्लाह का निधन 20 सितंबर 1927 को अमेरिका में हुआ। वह भारत को स्वतंत्र होते नहीं देख सके। उन्हें सैक्रामेंटो में दफनाया गया। भोपाल विश्वविद्यालय का नाम 1988 में उनके सम्मान में बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय रखा गया।

सार्वजनिक संस्थानों के नाम इतिहास को याद रखने का एक तरीका हैं, लेकिन किसी व्यक्ति की विरासत केवल नाम तक सीमित नहीं होती। अभिलेखों का संरक्षण, शोध, शिक्षण और स्थानीय इतिहास की सरल प्रस्तुति भी जरूरी हैं। नाम बदलने पर चर्चा हो तो ऐतिहासिक साक्ष्य, कानूनी प्रक्रिया और संबंधित समुदायों से संवाद के आधार पर होनी चाहिए। यह एक सामान्य विश्लेषणात्मक कसौटी है, किसी पक्ष के राजनीतिक दावे का समर्थन नहीं।

मुख्य परीक्षा शैली: अभ्यास प्रश्न

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में प्रवासी भारतीयों के योगदान का आकलन कीजिए। मौलाना बरकतुल्लाह की भूमिका के संदर्भ में विदेशी समर्थन प्राप्त करने के अवसरों और सीमाओं को स्पष्ट कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को विदेशों में सक्रिय भारतीयों ने विचार, संगठन और राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से व्यापक बनाया। बरकतुल्लाह इस अंतरराष्ट्रीय पक्ष के प्रमुख उदाहरण हैं।

मुख्य भाग में: उन्होंने पत्रकारिता और गदर आंदोलन से प्रवासी समुदायों को जोड़ा। 1915 में काबुल की अस्थायी निर्वासित सरकार में प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता की राजनीतिक माँग को विदेश में प्रस्तुत किया। उनके सहयोग में सामुदायिक एकता का विचार महत्वपूर्ण था। विश्वयुद्ध ने ब्रिटेन के विरोधी देशों से संपर्क के अवसर दिए। फिर भी विदेशी शक्तियों के अपने हित थे और निर्वासित संगठन का भारत के प्रशासन पर नियंत्रण नहीं था। इसलिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन घरेलू जनाधार और राजनीतिक क्षमता का विकल्प नहीं बन सका।

निष्कर्ष में: प्रवासी प्रयासों ने स्वतंत्रता की माँग को वैश्विक स्वर दिया। उनका महत्व समझते समय उपलब्धियों और रणनीतिक सीमाओं दोनों को देखना चाहिए।

स्रोत और सीमाएँ

- विश्वविद्यालय की संस्थागत जीवनी (पढ़ा): https://bubhopal.ac.in/Site/Upload/Menu/1069_About-Professor-Barkatullah_Barkatullah%20Bhopali.pdf
- संस्कृति मंत्रालय का ऐतिहासिक परिचय (पढ़ा): https://amritmahotsav.nic.in/district-reopsitory-detail.htm?17737=
- जून 2026 का ऐतिहासिक व्याख्यात्मक लेख (पढ़ा): https://indianexpress.com/article/explained/explained-history/maulana-barkatullah-prime-minister-name-bhopal-university-10726132/
- जून 2026 की स्वतंत्र रिपोर्ट (पढ़ा): https://theprint.in/feature/who-was-maulana-barkatullah-indias-1st-pm-in-exile-whose-name-bhopal-university-wants-to-drop/2950970/
- 26 जून 2026: प्रस्ताव आगे न बढ़ाने की रिपोर्ट (पढ़ा): https://timesofindia.indiatimes.com/city/bhopal/after-row-barkatullah-university-name-change-proposal-shelved/articleshow/132002766.cms
- 20 जुलाई 2026: विधानसभा में सरकार के उत्तर की समाचार रिपोर्ट (पढ़ा): https://www.thehawk.in/news/india/no-decision-to-rename-barkatullah-university-higher-education-minister-in-mp-assembly
- **सीमाएँ:** स्रोतों में स्थापना-दिवस 2 अक्टूबर/29 अक्टूबर/1 दिसंबर 1915 के विवादित रूप मिलते हैं; लेख केवल 1915 कहता है। PIB के 2024 भाषण का वर्णन अलग है; लेख संदर्भित रूप में निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री कहता है, 1947 के बाद के संवैधानिक प्रधानमंत्री नहीं। जून 2026 का नाम-बदलाव प्रस्ताव बाद में आगे नहीं बढ़ाया गया (26 जून रिपोर्ट) और जुलाई तक कोई सरकारी निर्णय नहीं (20 जुलाई रिपोर्ट); प्राथमिक विधानसभा-उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। जापान-वर्ष (1904/1909) के मतभेद के कारण वर्ष नहीं रखा गया।

इसी विषय का प्रारंभिक परीक्षा (तथ्य) लेख: मौलाना बरकतुल्लाह भोपाली — प्रमुख तथ्य